Toppersnotes
Unleash the topper in you

REET

राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा

Board of Secondary Education, Rajasthan

Level – II
(कला वर्ग)

भाग – 4

इतिहास एवं कला–संस्कृति

SIERRA INNOVATIONS

REET LEVEL – 2 (कला वर्ग)

इतिहास

क्र.सं.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
	भारत का इतिहास	
1.	प्राचीन इतिहास	1
2.	सिन्धु घाटी सभ्यता	3
3.	वैदिक काल	9
4.	महाजनपद	13
5.	गुप्त एवं मौर्य सम्राज्य	14
6.	जैन एवं बौद्ध धर्म	34
7.	गुप्तोत्तर काल	41
8.	वृहत्तर भारत	60
9.	भक्ति एवं सूफी आन्दोलन	62
10.	मुगल काल एवं मुगल व राजपूत सम्बन्ध	74
11.	भारतीय राज्यो के प्रति ब्रिटिश नीति	90
12.	भारतीय अर्थव्यवस्था पर ब्रिटिश प्रभाव	94
13.	1857 का विद्रोह	101
14.	पुनर्जागरण एवं सामाजिक सुधार	104
15.	राष्ट्रीय आन्दोलन या स्वतन्त्रता आन्दोलन	107
	राजस्थान का इतिहास एवं कला संस्कृति	
1.	राजस्थान की प्राचीन सभ्यताएँ एवं जनपद	119
2.	राजस्थान के प्रमुख राजवंशो का इतिहास	125
3.	राजस्थान 1857 की क्रांति	161
4.	किसान आन्दोलन	166
5.	राजस्थान के प्रजामण्डल	174
6.	राजस्थान के प्रमुख व्यक्तित्व/स्वतन्त्रता सेनानी	180

7.	राजस्थान का एकीकरण	189
8.	राजस्थान की चित्रकला एवं लोक कला	194
9.	राजस्थान के लोक नृत्य एवं लोक नाट्य	219
10.	राजस्थान के लोक देवता एवं संत	233
11.	राजस्थान के लोक संगीत	262
12.	राजस्थान की वेशभूषा एवं आभूषण	265
13.	राजस्थान के मेले एवं त्योहार	269
14.	राजस्थान की भाषा एवं साहित्य	281
15.	राजस्थान की विरासत	292

भारत का इतिहास

सामाजिक – धार्मिक पुनर्जागरण

- भारत में 18वीं 19वीं शताब्दी में अंध विश्वास अपने चर्म पर था। जाति प्रथा के कारण समाज का उच्च वर्ग समाज के निम्न वर्ग के साथ अनुचित व्यवहार करता था और इसी जाति प्रथा के कारण ही समाज में छुआ–छूत की स्थिति दिखाई देने लगी। ईसाई मिशनरियों ने अपने धर्म का प्रचार किया और प्राचीन भारतीय धर्म की आलोचना करना शुरू कर दिया।
- 19वीं शताब्दी के प्रारंम्भ में समाज का निम्न वर्ग सामाजिक समानता व आर्थिक सुविधाओं को प्राप्त करने हेतु ईसाई धर्म को स्वीकार करने लगा। अतः राम राममोहन राय, दयानन्द सरस्वती, विवेकानन्द के द्वारा धार्मिक आंदोलन चलाया गया।

राजा राम मोहन राय (1772–1833)

अन्य नाम

1. आधुनिक भारत के पिता
2. नवजागरण का अग्रदूत
3. सुधार आंदोलन का जनक
4. नवप्रभात का तारा
5. पत्रकारिता का अग्रदूत

- राजा राम मोहन राय का जन्म बंगाल के राधानगर के हुगली नामक स्थान पर हुआ। लगभग 15 वर्ष की आयु में इन्होंने मूर्ति पूजा का विरोध करना शुरू कर दिया था। राजा राम मोहन राय ने नेपाल में बौद्ध धर्म की शिक्षा ली। बनारस में राजा राम मोहन राय ने संस्कृत की शिक्षा ली। 1803 में राजा राम मोहन राय ने EIC की नौकरी की। जॉन डिग्गी ने इन्हें दीवान का पद दिया। इसी दौरान इन्होंने अंग्रेजी भाषा का ज्ञान प्राप्त किया। राजा राम मोहन राय फारसी, संस्कृत, ग्रीक, लैटिन भाषा के जानकार थे।
- राजा राम मोहन के द्वारा फारसी भाषा में ''तुहफात–उल–मुवाहिदीन'' नामक पुस्तक की रचना की गई। इस पुस्तक को एकेश्वरवादियों का उपहार कहा जाता है। इस पुस्तक के माध्यम से राज राम मोहन राय ने मूर्ति पूजा का विरोध किया।
- राजा राम मोहन राय सतीप्रथा, बालविवाह, छुआछूत, जाति प्रथा के विरोधी थे। राजा राम मोहन राय पाश्चात्य शिक्षा के समर्थक थे।
- 1815 में इन्होंने कंपनी की सेना से त्यागपत्र दे दिया और राजा राम मोहन राय ने ''आत्मीय सभा'' की स्थापना की।
- राजा राम मोहन राय उपनिषदों में वर्णित आत्मा की अमरता में विश्वास करते थे।
- राजा राम मोहन राय के द्वारा 1817 में डेविड हेयर के साथ मिलकर कलकत्ता में हिन्दू कॉलेज की स्थापना की गई।
- राज राम मोहन राय पर ईसाई धर्म का प्रभाव था। कलकत्ता में इनके द्वारा यूरिटेरियन कमेटी का गठन किया गया। सभी धर्मों की एक स्थान पर बैठकर चर्चा करने के लिए यूरिटेरियन कमेटी का गठन किया गया।
- राजा राम मोहन राय के द्वारा 1820 में प्रिसेप्टस ऑफ जीसस (अंग्रेजी में) नामक पुस्तक की रचना की गई।
- 1823 में जॉन डिग्वी के प्रयासों से इंग्लैण्ड से इस पुस्तक का प्रकाशन किया गया। इस पुस्तक में ईसाई धर्म में प्रचलित चमत्कारी कहानियों का विरोध किया गया।
- 1825 में राजा राम मोहन राय के द्वारा वेदांत कॉलेज की स्थापना की गई।

ब्रह्म सभा (20 अगस्त] 1828) – कलकत्ता

- हिन्दू धर्म में सुधार लाना।
- धार्मिक गुरूओं की आवश्यकता को समाप्त करना।
- प्रत्येक शनिवार को ब्रह्म सभा में धार्मिक विषयों पर विचार विमर्श किया जाता था। यह ब्रह्म सभा एकेश्वरवाद पर आधारित थी।
- राजा राम मोहन राय के द्वारा बंगाली भाषा में संवाद कौमुदी, फारसी भाषा में मिशतुल अजबाद तथा अंग्रेजी भाषा में ब्रह्मनिकल मैंगजीन का प्रकाशन किया गया।
- संवाद कौमुदी में सती प्रथा विरोध से संबंधित लेखों का प्रकाशन किया गया।
- विलियम बैंटिंग के काल में राजा राम मोहन राय के प्रयासों से नियम 17 के तहत सती प्रथा पर प्रतिबंध लगा दिया गया।
- 1829 में बंगाल में तथा 1830 में बम्बई में सती प्रथा पर प्रतिबंध लगा दिया।
- मुगल बादशाह अकबर द्वितीय ने राजा राम मोहन राय को राजा की उपाधि दी थी।
- अकबर द्वितीय की पेशन संबंधी वार्ता के लिए राजा राम मोहन राय इंग्लैण्ड गये और इंग्लैण्ड के ब्रिस्टल नामक स्थान पर इनकी मृत्यु हो गयी। यही पर इनकी समाधि है। इस समाधि पर विग्रहराज तृतीय द्वारा रचित नाटक हरिकेली की पंक्तियां उत्कीर्ण है।
- राजा राम मोहन राय के बाद ब्रह्म समाज का नेतृत्व देवेन्द्र नाथ टैगोर के द्वारा किया गया। केशवचन्द सेन के प्रयासों से कलकत्ता के बाहर ब्रह्म समाज का प्रचार हुआ। देवन्द्र नाथ टैगोर का ब्रह्म समाज आदि ब्रह्म समाज के नाम से जाना गया।
- केशवचन्द सेन का ब्रह्म समाज भारतवर्षीय ब्रह्म समाज के नाम से जाना गया।
- केशवचन्द सेन के प्रयासों से के.श्री.धरालू नायडू के द्वारा मद्रास में ''वेद समाज'' की स्थापना की गई। इस वेद समाज को दक्षिण भारत का ब्रह्म समाज कहा गया।

स्वामी दयानन्द सरस्वती (1824–1883)

- 1827 में गुजरात के टंकारा नामक स्थान पर दयानन्द सरस्वती का जन्म हुआ। इनका मूल नाम मूलशंकर था।
- स्वामी पूर्णानंद ने इन्हें दयानन्द सरस्वती नाम दिया था।
- इनके गुरू का नाम विरजानन्द था। विरजानन्द ने इन्हें वैदिक शिक्षा प्रदान की थी।
- दयानन्द ने आगरा में पाखण्ड खड़ीनी पताका फहराई थी।
- इनके द्वारा नारा दिया गया– ''वेदों की ओर लौटो''।
- दयानन्द सरस्वती ने छुआ–छूत, मूर्ति पूजा बाल विवाह व सती प्रथा का विरोध किया।
- इन्होंने हिन्दू धर्म को पुनः प्रतिष्ठित करने के लिए 10 नियम प्रदान किये थे।
- एनीबेसेंट ने दयानन्द सरस्वती के लिए कहा था कि स्वामी जी पहले ऐसे व्यक्ति है जिन्होंने यह कहा था कि ''भारत, भारतवासियों के लिए है।''
- 1874 में केशवचन्द सेन के कहने पर दयानन्द सरस्वती ने हिन्दी भाषा में सत्यार्थ प्रकाश की रचना की गई। पाखण्ड खण्डन, वेद भाष्य, ऋग्वेद भाष्य, अद्वैतमत का खण्डन पुस्तकें लिखी।
- 1875 में दयानन्द के द्वारा बम्बई में आर्य समाज की स्थापना की गई। 1877 में इसका मुख्यालय लाहौर में स्थापित किया गया।
- दयानन्द ने शुद्धि आंदोलन चलाया तथा गौ रक्षा समिति की स्थापना की थी।
- इन्होंने हिन्दी को राष्ट्र भाषा के रूप में स्वीकार किया था।

- दयानन्द सरस्वती पहले ऐसे व्यक्ति थे। जिन्होंने 'स्वराज' शब्द का प्रयोग किया।
- 1883 में अजमेर में दयानन्द सरस्वती की मृत्यु हुई थी।
- वेलेन्टाइन शिरोल ने आर्य समाज व बाल गंगाधर तिलक को भारतीय अशांति का जनक कहा गया।

स्वामी विवेकानन्द (1862–1902)

- स्वामी विवेकानन्द का मूल नाम नरेन्द्र था। खेतड़ी के राजा अजीतसिंह ने विवेकानन्द रखा।
- गुरू का नाम रामकृष्ण परमहंस था।
- रामकृष्ण परमहंस के बचपन का नाम – गंगाधर चटोपाध्याय था। ये कलकत्ता के तारकेश्वर में काली मंदिर के पुजारी थे।
- विवेकानन्द ने मूर्ति पूजा का समर्थन किया। इनका मानना था कि ईश्वर निगफ्रण व सगुण दोनों स्वरूप में मौजूद है।
- विवेकानन्द ने राजयोग, कर्मयोग, वेदांत फिलॉसफी नामक पुस्तकों की रचना की।
- इनके द्वारा अंग्रेजी भाषा में प्रबुद्ध भारत तथा बंगाली भाषा में उद्‌भोदन नामक पत्रिका का प्रकाशन किया।
- 1893 में विवेकानन्द ने शिकागो विश्वधर्म सम्मेलन में हिस्सा लिया। स्वामी जी के भाषणो को न्यूयाक्र हेराल्ड नामक समाचार पत्र में प्रकाशित किया गया। इसमें लिखा गया कि पश्चिम के लोगों ने पूरब की ओर ईसाई मिशनरियों को भेज कर बेवकूफी की।
- विवेकानन्द के द्वारा 1896 में न्यूयाक्र में वेदांत सोसायटी की स्थापन की गई।
- 1897 में कलकत्ता में रामकृष्ण मठ की स्थापना की गई।
- 1900 में पेरिस में दूसरा विश्व धर्म सम्मेलन हुआ जिसमें स्वामी जी ने हिस्सा लिया था।
- सुभाष चन्द्र बोस ने विवेकानन्द को आधुनिक राष्ट्रीय आंदोलन का आध्यात्मिक पिता कहा।
- सिस्टर निवेदिता ने विवेकानन्द के उपदेशों का प्रचार किया।
- निवेदिता का मूल नाम माग्रेट नोबेल था।

अन्य महत्त्वपूर्ण तथ्य

- गोपाल हरिदेशमुख – लोकहितवादी के नाम से प्रसिद्ध
  इनके द्वारा 1848 में ''प्रभाकर'' नामक समाचार पत्र का प्रकाशन किया। इन्होंने ''जातिभेद'' नामक पुस्तक की भी रचना की थी।
- केशवचन्द सेन की प्रेरणा से आत्माराम पांडुरंग के द्वारा बम्बई में प्रार्थना समाज की स्थापना की गई। प्रार्थना समाज को लोकप्रिय बनाने का श्रेय महादेव गोविन्दरानाडे को दिया जाता है। 1891 में इनके द्वारा विडो रि–मैरिज एसोशियन की स्थापना की गई।
- 1875 में रूसी महिला वलावत्सकी तथा अमेरिका के कर्नल ऑलकॉट के द्वारा न्यूयाक्र में थियोसोफिकल सोसायटी की स्थापना की।
- 1905 में बम्बई गोपाल कृष्ण गोखले के द्वारा भारत सेवक संघ की स्थापना की गई।

राजस्थान का इतिहास एवं कला संस्कृति

राजस्थान में लोकदेवता

राजस्थान में कुल पाँच पीर है – 'राह में पंगो'

1. रामदेवजी
2. हड़बूजी
3. मांगलिया मेहाजी
4. पाबूजी
5. गोगाजी

- ऐसे लोकदेवता जो सभी धर्मों में समान रूप से पूजे जाते हैं।
- ये पीर के श्रेणी में आते हैं।
- झुन्झार – गौरक्षा करते समय अपने प्राणों का त्याग।
- खवि – पित्तर पूजा से ख्याती प्राप्त लोकदेवता
- खारामामा – जानवर की बली (शराब का सेवन)
- मीठा मामा – साधारण प्रकार का भोग

रामदेवजी

- पीरों का पीर रामदेवजी हैं।
- जन्म – उण्डुकासमेर गाँव शिव तहसील, बाड़मेर वि. स. 1405/1409
- पिता – अजमलजी, माता – मेणादें (मेणीदेवी)
- पत्नी – नेतल दे – दलजो सोढा की पुत्री – अमरकोट – पाकिस्तान
- बहिन – सुगणा बाई, लांच्छा
- धर्म बहन – डाली बाई – मेघवाल जाति
- भाई – ब्रह्मदेव – बलराम का अवतार
- गुरू – बालीनाथ – गुफा – मसुरीया पहाड़ी जोधपुर
- अवतार – कृष्ण अवतार
- वंश – अर्जुन वंशीय
- वाहन – लीला घोड़ा (श्वेत) रंग – सफेद
- जाति – राजपूत (गोत्र – तंवर)
- समाधि – जीवित – भाद्रपद शुक्ल एकादशी (रूणेचा, रामदेवरा, जैसलमेर)
- वि.स./1458 ई. में।

उपनाम

कुष्ठ रोग निवारक देवता, ठाकुर जी

- पीरों का पीर, साम्प्रदयिकता सद्भाव का देवता। मक्का के 5 पीरों ने पंचपीपली नामक स्थान पर पीरों का पीर कहा था।
- सहयोगीः हरजीभाटी, लक्खी बंजारा, रत्ना राईका हैं।
- यह भारत के सबसे बड़े लोकदेवता है।
- रामदेवजी ने शुद्धि आन्दोलन चलाया परावर्तन नाम से इस आन्दोलन में मुसलमान बने हिन्दूओं की शुद्धि कर वापिस हिन्दू बनाया था।
- भैरव राक्षस का वध सातलमेर (पोकरण) में रामदेव जी ने किया।

- रामदेव जी ने छुआछुत को समाप्त किया था।
- रामदेव जी ने कामड़िया पंथ की स्थापना की।
- रामदेव जी ने कुष्ठ रोग निवारण किया था।
- रामदेव जी के चमत्कारी उपाय को 'पर्चा देना' कहते है।
- एकमात्र लोकदेवता रामदेव जो कवि भी थे।
- रामदेव जी ने 'चौबीस बणियां' ग्रन्थ लिखा।
- रामदेव जी के मेघावाल जाति के भक्त 'रिखिंया' कहलाते हैं।
- हिन्दू कृष्ण का अवतार मानकर व मुसलमान 'रामसा पीर' के रूप में पूजते हैं।
- डालीबाई ने रामदेव जी के एक दिन पहले समाधि ली थी।
- रामदेव जी हड़बूजी के समकालीन थे।
- रामदेव जी के मन्दिरों को 'देवरा' कहा जाता है जिन पर श्वेत या 5 रंगों की ध्वजा फहराई जाती है, जिसे 'नेजा' कहते हैं। (सफेद, काला, लाल, हरा, नीला)
- रामदेव जी मन्दिर का निर्माण गंगासिंह ने सन् 1931 में करवाया था।
- रामदेव जी ने मूर्ति पूजा, तीर्थयात्रा, जाति प्रथा का विरोध किया अतः एकमात्र लोकदेवता जिसके प्रतीक चिन्ह के रूप में 'पग्लये – पद्चिन्ह' पूजे जाते हैं।
- रामदेव जी समाज सुधारक भी थे।
- रामदेव जी का मेला 'भाद्रपद शुक्ल दशमी' (भादवा ''बाबेरी बीज'' शुक्ल द्वितीया से भादवा शुक्ल एकादशी) को रूणेचा जैसलमेर में मेला भरता है।
- यह साम्प्रदायिक सद्भाव का सबसे बड़ा मेला है।
- लोकदेवताओं में सबसे लम्बा गीत रामदेव जी का है (60. मी.)
- रामदेव जी के रात्रि जागरण किये जाते है जिन्हें 'जम्मा' कहते हैं।
- रामदेव के यात्री 'जातरू' कहलाते हैं।
- रामदेवजी के समकालीन मल्लीनाथ जी थें जिससे पोकरण क्षेत्र प्राप्त किया।
- रामदेवजी को कपड़ा बना घोड़ा चढाया जाता है। जिसे 'घोड़ले' कहते हैं।
- रामदेवजी के याद में गाये जाने वाले गीत ब्यावले कहलाते हैं व फड़ ब्यावले भोपे बांचते है। (जैसलमेर, बीकानेर)
- रामदेवजी का पवित्र स्थान 'पंची बावड़ी' पोकरण (जैसलमेर) हैं।
- रामदेवजी ने हरजी भाटी को पहला पर्चा दिया था।
- रामदेवजी की समाधि स्थल – राम सरोवर की पाल कहलाती है।
- रामदेवजी ने अपने बहन सुगणा को पोकरण क्षेत्र दहेज में दे दिया था व रूणेचा की स्थापना की थी।
- सुगणा बाई का विवाह पूंगल (बीकानेर) के शासक विजयसिंह के साथ हुआ।
- रामदेवजी के भक्त जयकारे लगाते हैं – जिसे 'बादली' कहते हैं।
- रामदेवजी का धागा/तांती – पातरी / कुण्डली कहलाते हैं।
- रामदेवजी का थान/देवरा कंदन वृक्ष के नीचे होते हैं।
- रामदेवजी के पद्चिन्ह – पग्लया कहलाते हैं इनके रखने के स्थान को ताख या आलिया कहते हैं।
- रामदेवजी की 'कसम' 'आण' कहलाती है।

मुख्य पूजा स्थल

- खुण्डियावास – अजमेर (राजस्थान का छोटा रामदेवरा)
- सूरता खेड़ा – चित्तौड़गढ
- बिरांटिया – पाली
- कठोती – नागौर
- जूनागढ़ – गुजरात (भारत का छोटा रामदेवरा)
- मंसुरिया पहाड़ी – जोधपुर
- रामदेवजी की राजस्थान से बाहर मान्यता गुजरात व मध्यप्रदेश में हैं।
- यूरोप क्रांति से पहले रामदेव जी द्वारा हिन्दू समाज को दिया गया सन्देश 'समता व बन्धुता' था।
- रामदेवजी ने पश्चिमी भारत में मतान्तरण व्यवस्था को रोकने को अहम भूमिका निभाई थी।
- रामसरोवर पाल के किनारे – पर्चा बावड़ी है।
- रामदेवजी फड़ का निर्माण – चौथमल जोशी द्वारा – वाद्य यंत्र – रावण हत्था तथा वाचन – कामड़ जाति के भोपे करते हैं।
- इस फड़ को मुख्यतः कोली, भांभी, बलाई अन्य रामदेव जी भक्तों द्वारा बाँचा/गाया जाता है।

गोगाजी

- जन्म – 1003 वि. सं. – ददरेवा (चूरू) (भाद्रपद कृष्ण नवमी)
- पिता – जेवरसिंह, माता – बाच्छल दे।
- पत्नी – 2
- प्रथम विवाह – सुरियल – कजरीवन की पुत्री – उत्तरप्रदेश
- दूसरा विवाह – केलमदे – कोलुमण्ड (जोधपुर) बुढोजी राठौड़।
- पुत्र – कुल – 47 गुरू – गोरखनाथ जी → साँपों में सिद्धि प्राप्त।
- सवारी – नीली घोड़ी (गोगा बप्पा) कहते हैं– (रंगनीला)
- **उपनाम:**

  जाहरपीर – महम्मूद गजनवी ने कहा था।

  ↓→ शाब्दिक अर्थ – ''साक्षात् देवता''
- राजा मुण्डुलिक, जिन्दा पीर, साँपों का देवता, गौरक्षक
- प्रतीक चिन्ह पत्थर की मूर्ति पर साँप का चित्रण।
- गोगाजी का छोटा मन्दिर – थान कहलाता है जो खेजड़ी वृक्ष के नीचे होता है।
- ध्वजा – सफेद रंग की होती है।
- गीत – छांवली कहलाते हैं।
- पुजारी – चायल कहलाता है।/चेवाण
- मौसेरे भाई – अर्जन – सर्जन थे। – माता – कांछल देवी थी।
- गोगाजी का जन्म गोरखनाथ जी द्वारा दिये गये 'गुगल' फल से हुआ था।
- गोगाजी ने नागदेवता ताक्षक को पराजित कर अपनी पत्नी केलम दे को पुनः जीवित कराया। अतः इसे साँपों का देवता कहते हैं।
- मौसेरे भाई अर्जन – सर्जन के साथ जमीनी विवाद के कारण सांचौर जालौर में महम्मूद गजनवी ने गोगा जी की गायें लूटी।
- गोगा जी महम्मूद गजनवी के सामने गौरक्षा करते हुए वीर गति को प्राप्त हो गया।

- गोगाजी व गजवनी के मध्य युद्ध का वर्णन कवि मेह द्वारा रावसाल ग्रन्थ में किया गया है।
- कर्नल रॉड के अनुसार गोगाजी के 47 पुत्र न 52 भतिजों के साथ यह युद्ध किया व वीर गति को प्राप्त सतलज नदी के पास 1023 ई. गजनवी के साथ गोगाजी ने 11 बार युद्ध किया था।
- गोगाजी के समकालीन महम्मूद गजनवी व गोरखनाथ जी हैं।
- गोगाजी की धूरमेड़ी 'गोगामेडी' तहसील नोहर जिला हनुमानगढ में है।
- गोगामेड़ी गाँव में गोगाजी के मुख्य मन्दिर का निर्माण फिरोजशाह तुगलक ने मकबरेनुमा आकृति में करवाया।
- सन् 1931 में आधुनिक मंदिर का निर्माण गंगासिंह ने करवाया।
- गोगाजी मन्दिर के मुख्य द्वारा पर अरबी भाषा में बिस्मिला शब्द अंकित है, इसका अर्थ – शुभ होना।
- गोगाजी के पुजारी **चायल** कहलाते हैं।
- 11 माह पूजा मुस्लिम (कयामखानी मुस्लिम) करते हैं।
- भाद्रपद के एक महीने में पूजा हिन्दू 'मेहर' – मेघवाल करते है जिन्हें भोपा कहते हैं।
- गोगाजी का मुख्य मंदिर गोगामेड़ी है।
- गोगाजी का मेला – भाद्रपद कृष्ण नवमी को गोगामेडी में लगता है।
- भादवा सुदी एकम से भादवा सुदी ग्यारस तक।
- यह उत्तरी – भारत का सबसे बड़ा मेला है।
- इस मेले में 'गोगा नृत्य' किया जाता है।
- गोगाजी की ओल्डी साँचोर (जालौर) की प्रसिद्ध है।
- यहाँ पर गोगाजी की गायें लूटी गयी।
- इस ओल्ड़ी का निर्माण राजाराम कुम्हार ने करवाया। (केरियां गाँव)
- गोगाजी की शीश मेड़ी/सिद्ध मेड़ी ददरेवा (चूरू) में है।
- यहाँ पर गोरखाना तालाब है। गोगाजी की घोड़ी की प्रतिमा है।
- यहाँ पर गोगाजी की घोड़ी पर सवार प्रतिमा है। (गोरखनाथजी की प्रतिमा)
- हिन्दू 'नागराज' व मुस्लिम गोगापीर के रूप में पूजते हैं।
- गोगाजी का वाद्य यंत्र डेरू है – आम की लकड़ी से निर्मित होता है।
- गोगाजी को गुजरात में रेबारी जाति के लोग 'गोगामहाराज' कहते हैं।
- राजस्थान से बाहर मान्यता – हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश में है।
- गोगाजी राजपूत जाति में चौहान वंश थे।
- हिन्दू – मुस्लिम एकता एंव सांस्कृति समन्वय की दृष्टि से गोगाजी का विशेष महत्व है।
- उत्तर प्रदेश में मुस्लिम समुदाय के लोग 'जाहरपीर' के रूप में पूजते हैं।
- यह लोग गोगाजी के मेले में लौहे की छड़ी से अपने शरीर पर प्रहार करते हैं, जिसे '**पेंजण**' कहते हैं।
- गुगो – गु – गुरू, गो – गोरखनाथ को द्योतक है।
- गोगामेड़ी के चारों तरफ जंगल को 'पणिरोपण' एवं जोहड़ कहते हैं।
- भाद्रपद कृष्ण नवमी (गोगा नवमी) को गोगा जी की 'अश्वरोही' भाला लिए यौद्धेय के प्रतीक के रूप में अथवा सर्प के प्रतीक के रूप में पूजा जाता है।
- गोगाजी का मन्दिर खेजड़ी वृक्ष के नीचे होता है।
- गोगाजी को जाहरपीर के रूप में पूजने से 'सर्प देव' का विष प्रभावहीन हो जाता है।

केसरिया कुंवरजी

- यह गोगाजी का ज्येष्ठ पुत्र था।
- मंदिर खेजड़ी वृक्ष के नीचे ध्वजा सफेद रंग से युक्त।
- जन्म स्थल – ददरेवा (चूरू)
- इसे भी साँपों का देवता कहते हैं – भोपे साँपों का जहर मुख से चूसकर बाहर निकालते हैं।
- पूजास्थल – ददेरेवा (चूरू)
  - ➢ बुध्मसर (हनुमानगढ)
- मेला – भाद्रपद कृष्ण अष्टमी

मेहाजी मांगलिया

- जन्म स्थल – बापिणी गाँव (जोधपुर) 14वीं सदी
- जोधपुर शासक राव चूँड़ा के समकालीन थे।
- पिता – गोपालराव सांखला
- गौत्र – राजपूत – 'सांखला'
- कर्नल जेम्स टॉड ने गौत्र – पंवार बताया।
- ननिहाल पक्ष में पालन पोषण होने के कारण 'मांगलिया' कहलाये।
- मेला – भाद्रपद कृष्ण अष्टमी – बापिणी गाँव जोधपुर
- घोड़े का नाम – किरड़ काबरा था।
- जैसलमेर के राव रणगदेव भाटी से गौरक्षा करते हुए युद्ध में वीर गति को प्राप्त हुए।
- मेहाजी का सारा जीवन धर्म की रक्षा व मर्यादाओं की पालना में बीता था।
- पुजारी – मांगलिया राजपूत
  ↓→ वंश में वृद्धि नहीं होती है।
- अच्छे शकुन शास्त्री भी माने जाते थे।

पाबूजी

- जन्म – वि.स. 1296 कोलुमण्ड – फलौदी – जोधपुर
- पिता – धाँधल जी माता – कमला दे।
- पत्नी – फूलन दे/सुप्यार दे – अमरकोट पाकिस्तान– सूरजमल सोढा
- जाति – राजपूत – गौत्र – राठौड़
- सवारी – केसर कालवी (घोड़ी) (यह देवल चारणी की थी।)
- अवतार – लक्ष्मण
- उपनाम – हाड़ – फाड़ के लोकदेवता, उँटों का देवता
- प्लेग रोग का निवारक देव, गोरक्षक देवता
- पाबूजी राठौड़ ने देवली चारणी की गायों की रक्षा करते हुए देचूं (जोधपुर) में बहनोई जायल (नागौर) शासक जिन्दराव खिंची के सामने युद्ध करते हुए 1276 ई. में वीर गति को प्राप्त।
- पाबूजी की जीवनी ग्रन्थ पाबू प्रकाश में मिलती है – लेखक – आसियाँ मोडजी।
- पाबूजी ने 7 थोरी भाइयों की रक्षा गुजरात के अन्ना बागेला नामक शासक से की इस कारण इन्हें थोरी जाति अराध्या देव मानती है (थोरी/भील)

पाबूजी के सहयोगी

- चान्दा, हसमल, डेमा, सलजी सोंलकी, सावंतजी राईका।
- सभी लोक देवताओं में सर्वाधिक लोक प्रिय फड़ पाबूजी की है।
- पाबूजी फड़ का वाचन करते समय रावण हत्था वाद्य यंत्र का प्रयोग किया जाता है। थोरी/राईका जाति के लोग सांरगी वाद्य मंत्र का प्रयोग करते हैं।
- पवाड़े – वीर पुरूषों की लोकगाथाएँ है।
- पाबूजी के पवाड़े पढते समय 'माठ' वाद्य यंत्र का प्रयोग किया जाता है।
- राईका/रेबारी व ऊँट पालक जाति के अराध्या देव!
- ऊँटों के सर्रा रोग के निवारक हैं।
- प्रतीक चिन्ह – अश्वारोही भाला एवं झुकी हुई पगड़ी।
- मन्दिर – कोलुमण्ड (जोधपुर) में चैत्र अमावस्या को मेला भरता है इस मेले में थाली नृत्य करते हैं।
- सर्वप्रथम ऊँट लाने का श्रेय मारवाड़ में पाबूजी को है।
- पाबूजी की याद में गाये जाने वाले गीत 'पवाड़े' कहलाते हैं।
- पाबूजी हमेशा दुल्हे के भेष में रहते हैं।
- मुहणोत नैणसी महाकवि मोडिया आशजी के अनुसार पाबूजी का जन्म वर्तमान बाड़मेर से आठ कोस दूर खारी खाबड़ के जूना ग्राम में अप्सरा के गर्भ से हुआ। पाबूजी ने विवाह में $3\frac{1}{2}$ फेरे लिए अतः पश्चिमी राजस्थान मे पाबूजी के स्मृति में 4 फेरे लिए जाते हैं।
- महेर जाति के मुसलमान इसे पीर मानकर पूजा करते हैं।

हड़बूजी

- जन्म – भूंडेल गाँव (नागौर) 15 वीं सदी
- पिता – मेहाजी साँखला
- जाति – राजपूत
- गौत्र – सांखला
- वाहन – सियार
- मन्दिर में बैलगाड़ी की पूजा होती है।
- एकमात्र गौ सेवक लोकदेवता था।
- हड़बूजी ने मेवाड़ अधिकार क्षेत्र से मण्डोर को मुक्त कराया व राव जोधा को आशीर्वाद व तलवार भेंट की थी।
- राव जोधा ने मण्डोर अधिकार के बाद हड़बूजी को बैंगटी क्षेत्र व गाड़ी उपहार स्वरूप दी थी।
- हड़बूजी का पूजा स्थल समाधि स्थल बैंगटी गाँव (फलौदी) जोधपुर में हैं।
- यहाँ पर भाद्रपद शुक्ल दशमी को मेला भरता है।
- इस मंदिर का निर्माण जोधपुर शासक 1721 ई. में अजीत सिंह ने करवाया।
- अपने पिता की मृत्यु के बाद हरभमजाल क्षेत्र में रहने लगे, यहाँ पर रामदेवजी के 8 दिन बाद अस्त्र–शस्त्र त्याग गुरू बालीनाथ से दीक्षा ली।
- रामदेव जी के 8 दिन बाद जीवित समाधि ली थी।
- हड़बूजी व रामदेव जी मौसेरे भाई हैं।
- इसे महान् शकुन शास्त्र का जनक कहा जाता है।
- गायों का सेवक एकमात्र लोकदेवता।

- सन्यासी लोकदेवता भी कहते हैं।
- अपंग/पंगू गायों की सेवा का कार्य किया।

मल्लीनाथजी

- जन्म – विक्रम संवत् 1415 तिलवाड़ा – बाड़मेर
- पिता – मारवाड़ के रावल सलखा/रावतीड़ा जी।
- माता – जीणा दे। जीणा दे के ज्येष्ठ पुत्र के रूप में।
- पत्नी – रूपा दे – मन्दिर – भालासाल गाँव बाड़मेर
- गुरू – उगम सिंह भाटी
- **उपनाम**
  त्राता (रक्षक), चमत्कारी पुरूष, सिद्ध लोकदेवता, मालाणी का धणी मल्लीनाथ ने 1378 ई. में फिरोजशाह तुगलक व मालवा **सूबेदार निजामुद्दीन** की सेना को मार भगाया था।
- मल्लीनाथ ने 1399 ई. में कुण्डापंथ की स्थापना की थी व मारवाड़ के सारे संतो को एकत्र कर एक वृहद् हरि कीर्तन करवाया था। (चैत्रशुक्ल – द्वितीया)
- मारवाड़ में चेचक व बोदरी रोग का निवारण किया।
- मल्लीनाथ ने अपने भतीजे राव चूड़ा की 1394 ई. में मण्डोर व नागौर जीतने में मदद की थी।
- मल्लीनाथ जी की मृत्यु चैत्र शुक्ल द्वितीया को हुई थी।
- अपनी रानी रुपादे की प्रेरणा से उगमसिंह से शिक्षा ग्रहण कर योग साधना की दीक्षा प्राप्त की। (1389 ई.)
- पिता मृत्यु के पश्चात् मल्लीनाथ अपने चाचा कान्हड़दे के यहाँ महेवा में शासन प्रबन्धन देखने लगे व कान्हड़दे की मृत्यु के पश्चात् महेवा के स्वामी बन गये थे।
- मेलाः चैत्रकृष्ण एकादशी से चैत्र शुक्ल एकादशी तक
- राजस्थान का सबसे प्राचीन पशु मेला है।
- इस मेले में थारपारकर व कांकरेज पशुओं का क्रय–विक्रय होता है।
- यह मेला लूणी नदी के तट पर लगता है।
- मल्लीनाथ जी के नाम पर ही बाड़मेर क्षेत्र को 'मालाणी' कहा जाने लगा।
- मल्लीनाथ निर्गुण व निराकार ईश्वर को मानते थे।

वीर बिग्गाजी/बग्गाजी

- जन्म – रिड़िगांव – बीकानेर (जाट परिवार में)
- पिता – राम मोहन व माता – सुल्तानी देवी।
- जाखड़ समाज के कुल देवता हैं।
- मेला – 14 अक्टूबर बिग्गा गाँव श्री डूँगरगढ तहसील बीकानेर में भरता है।
- गोरक्षा करते हुए मुस्लिम आक्रान्ताओं से राठेली जोहड़ी युद्ध में वीरगति को प्राप्त हो गये थे – 1336 ई/वि. सं. 1393 बीकानेर में यह युद्ध हुआ।

पन्नराजजी

- पनरासर – नागा गाँव जैसलमेर (क्षत्रिय परिवार में जन्म)
- इन्हें तोतले बच्चों का लोकदेवता कहते हैं।
- ब्राह्मणों की गायों की रक्षा करते हुए मुस्लिम आक्रान्ताओं के सामने कोटड़ा गाँव जैसलमेर में वीर गति को प्राप्त हुए।

- वर्ष में दो बार मेले लगते हैं – भाद्रपद शुक्ल दशमी, माघ शुक्ल दशमी – पनरासर गाँव में
- मुख्य स्थल – पनरासर गाँव (जैसलमेर)

वीर फत्ताजी

- जन्म – सांथु गाँव जालौर (गज्जारणी परिवार में)।
- मंदिर – सांथु गाँव जहाँ भाद्रपद शुक्ल नवमी को मेला भरता है।
- फत्ता जी ने गाँव की मान मर्यादा के लिए प्राण त्याग दिये थे।
- अतः इसे ग्राम रक्षक देवता कहते हैं।
- फत्ता जी ने शास्त्र विद्या ज्ञान प्राप्त किया।

भोमिया जी

- इन्हें भूमि रक्षक देवता कहते हैं।
- भूमि रक्षक देवी – दुर्गा माता हैं। अश्विन शुक्ल अष्टमी
- राजस्थान के प्रत्येक गाँव के बाहर मंदिर है।
- इन्हें अकाल रक्षक देवता व राज्य की सीमा रक्षा देवता भी कहते हैं।
- प्रतीक चिन्ह के रूप में काष्ठ का तोरण होता है।
- नारसिंह भोमिया – आमेर (जयपुर), हरदीन भोमिया – नागौर
- सूरजमल भोमिया – दौसा, मोती भोमिया – नाथाद्वारा (राजसमन्द)
- लकड़ा भोमिया – जैसलमेर

बाबा मामा देव

- राजस्थान का एकमात्र देवता जिसकी मूर्ति न होकर काष्ठ का तोरण होता है। मन्दिर खेजड़ी वृक्ष के नीचे। दूध से नहलाया जाता है।
- इसे बरसात का लोकदेवता कहते हैं।
- प्रसन्न रखने के लिए भैंसे की बलि दी जाती है।
- मामादेव का मुख्य मन्दिर – स्यालोदड़ा (सीकर) में है।
- यहाँ पर प्रतिवर्ष रामनवमी को मेला भरता है।
- सवारी – भैंसा / पाड़ा

जवाहरजी – डूँगजी

- ये दोनों चचरे भाई थे।
- वास्तविक नाम – बालजी व भूरजी था।
- जवाहरजी बाठौड़ गाँव – सीकर व डूँगजी पटौदा (लक्ष्मणगढ) सीकर के निवासी थे। ये दोनों शेखावत या कच्छवाह राजपूत थे।
- इनको लूट – पाट का देवता कहते है।
- जवाहर जी को इनके ससुराल झडवासा अजमेर में भैरुसिंह की सहायता से गिरफ्तार कर आगरा जेल मे कैद कर लिया।
- 1846 ई. लोटीया जाट, करणीया, मीणा, सांवत मीणा, सेफुभील व मेहर इत्यादी के सहयोग से आगरा जेल से रिहा करवा लिया।
- 1846 ई. में इन्होंने सेवर (भरतपुर) जेल को लूटा।

- 1847 ई. में इन्होंने नसीराबाद अजमेर छावनी को लूटा। वहाँ से इन्हें – 27 हजार रुपये प्राप्त हुए।
- इन्होंने भीलवाड़ा में धनोप माता मन्दिर बनवाया और पुष्कर में सीढ़ियाँ लगाई थी।
- इन्हें धाड़वी धड़ायती लोक देवता भी कहते है।

    ↓→ काफिलों को लूटने वाले (गरीबों में बाँटने वाले)

बाबा झूंझार जी

- जन्म – स्वंतत्रता से पूर्व – इमलोहा (सीकर) राजपूत परिवार तीन भाइयों व वर – वधु सहित 5 मूर्तियाँ हैं।
- इनका मन्दिर प्रायः खेजड़ी वृक्ष के नीचे होता है।
- रामनवमी (चैत्रशुक्ल नवमी) को स्यालोदड़ा सीकर में मेला भरता है।
- इन्हें मिरगी निवारण लोक देवता भी कहते हैं।
- नवविवाहित वर – वधु के जोड़े जात देने आते हैं।
- छोटे बच्चों के झाडूला भी उतारते हैं।

भंवर बाबा

- नांगला – जहाज (भरतपुर)
- इन्हें भतूल्या (भभूल्या) का देव कहते हैं।
- वाहन – भैसा/पाड़ा – एक हाथ में झाड़ व दूसरे हाथ में लाठी। ग्वालों के पालन हार, कष्ठनिवारक मन्दिर – नीम के वृक्ष के नीचे।

देव बाबा

- इन्होंने मृत्यु के बाद अपनी बहन 'एलादी' को भात पहनाया।
- नांगला – जहाज – भरतपुर
- गुर्जर ग्वालों के देवता, मेला भाद्रपद शुक्ल – 5 – 6 चेत्र शुक्ल 5
- मेव, गुर्जर व मीणा जाति के प्रमुख देवता हैं। (पशु चिकित्सा का अच्छा ज्ञान)

कल्लाजी राठौड़

- (दुर्गाष्टमी) जन्म वि.सं. 1601 सामियाना गाँव मेड़ता सिटी नागौर
- पिता – आसकरण माता – श्वेतकंवर
- पत्नी – कृष्णा/कृष्णापादे शिवगढ शासक कृष्णदास की पुत्री।
- कल्लाजी की बुआ मीरा बाई थी। गुरू – भैरवनाथ
- इन्हें चार हाथों वाले लोकदेवता भी कहते हैं।
- इन्हें दो सिर वाले लोकदेवता कहते हैं।
- इन्हें शेष नाग का अवतार माना जाता है। बालब्रह्मचारी, योगी।
- इन्हें औषधी विज्ञान, अस्त्रशस्त्र का ज्ञाता, योगा अभ्यास में भी पारंगत थे।
- कल्लाजी की छतरी – चित्तौड़गढ दुर्ग में है। (भरवपौल)
- इन्हें कणधम, कल्याण, केहर केसर व अफीम का स्वामी भी कहते है।
- कल्लाजी का मंदिर सामलिया ग्राम डूँगरपुर में काले पत्थर की मूर्ती है।
- जिस पर भील केसर व अफीम चढ़ाते हैं।
- प्रधान/सिद्ध पीठ – रनेला (उदयपुर) में है यहीं पर इनकी पत्नी कृष्णादेवी इनके साथ सती हुई थी।
- यहाँ पर आश्विन शुक्ल नवमी को मुख्य मेला भरता है।
- छोटा मेला हर रविवार को भरता है।

- भूत पिशाच ग्रस्त लोग, रोगी पशु, पागल कुत्ता, मानसिक रोगी, गौयरों से दंशित जहर से निवारण होता है।
- मेवाड़ महाराणा उदयसिंह के समकालीन थे।
- फरवरी – 1568 मेवाड़ (चित्तौड़ दुर्ग) की रक्षा करते हुए अकबर के सामने वीर गति को प्राप्त हो गया था।
- जयमल इनके चाचा थे।
- वीर गति को प्राप्त – फरवरी – 1568 भैरवपोल
- कल्लाजी की कुल देवी – नागणेची माता थी।

देवनारायण जी

- जन्मः वि. स. 1300 / ई. 1239 में मालेसर की डूंगरी गोठदड़ावत आसींद भीलवाड़ा।
- पिता – सवाई भोज
- माता – सेढूखट्टाणी थी।
- पत्नी – पिंपलदे (धार मध्यप्रदेश, जयसिंह की पुत्री)
- बगड़ावत – गुर्जर परिवार में हुआ था।
- अवतार – विष्णु (गुर्जर जाति मानती है।)
- बचपन / लालन – पालन देवास मध्यप्रदेश (ननिहाल)
- बचपन का नाम – उदय सिंह था।
- देवनारायण जी के गीत – 'बगड़ावत' कहलाते हैं।
- घोड़े का नाम – लिलागर / नीलागर
- देवनारायण ने भिन्नाय अजमेर शासक दुर्जनशाल से अपने पिता की हत्या का बदला लेते हुए दुर्जनशाल की हत्या की व गायों को आजाद करवाया व भिन्नाय का शासक अपने छोटे भाई महेन्दू को बना दिया।
- देवनारायण जी ने नीम को पत्तियों व गोमूत्र से 36 प्रकार रोग निवारक औषधि बनायी अतः देवनारायण जी को औषधिजनक / आयुर्वेदिक जनक कहते हैं।
- देवनारायण जी को राज्यक्रान्ति का जनक भी कहते है।
- इनका मन्दिर नीम वृक्ष के नीचे कच्ची ईंटों के साथ होता है।
- इनका पूजा नीम की पत्तियाँ व कच्ची ईंटों के साथ होती है।
  इनको भोग दलिया व छाछ का लगाया जाता है।
- देवनारायण जी का मूल देवरा आसींद (भीलवाड़ा) गोठ दड़ावत में है।
- देवनारायण जी ने देवमाली ब्यावर (अजमेर) में अपनी देह त्यागी थी यहाँ पर भादवा शुक्ल सप्तमी को मेला भरता है।
- देवनारायण जी फिल्म बन चुकी है जिसमें देवजी की भूमिका नाथू सिंह गुर्जर ने निभाई थी।

अन्य देवरे

- देवमाली (ब्यावर, अजमेर) –भाद्रपद शुक्ल सप्तमी को मेला भरता है।
- देवधाम जोधपुरिया निवाई (टोंक) – प्रमुख धाम (गुर्जर जाति का)
- गुजरियावास – नागौर
- देवडूँगरी – चित्तौड़गढ – मंन्दिर निर्माण – महाराणा सांगा – आराध्य देव
- आसींद (भीलवाड़ा) – गुर्जरों का पवित्र स्थल है। (मुख्य पूजा स्थल)

देवनारायण जी फड़

- सबसे प्राचीन सबसे लम्बी, बड़ी व छोटी – 2 सितम्बर, 1992 में भारत सरकार ने 2X2 Cm. डाक टिकट जारी की ₹ 5 की।
- फड़ – 30 फुट लम्बी व 5 फुट चौड़ी है।
- जंतर वाद्य यंत्र का प्रयोग होता है।
- अविवाहित गुर्जर भोपों द्वारा वाचन।

- देवनारायण जी स्वयं पर 2011 में ₹ 5 की डाक टिकट जारी की।
- देवनारायण जी के हर रात – दिन पहर गाये जाने पर 6 माह में पूर्ण होते हैं।

रूपानाथ जी / झरड़ाजी

- पाबूजी राठौड़ के भतीजे हैं।
- हिमाचल प्रदेश में 'बालकनाथ' के रूप में पूजा होती है।
- जिन्दराव खिंची की हत्या कर पाबूजी के मौत का बदला लिया।
- राजस्थान में मुख्य पूजा स्थल–कोलुमण्ड (जोधपुर) सिम्भुदड़ा – नोखा – बीकानेर।

तेजाजी

- जन्म – वि. सं. 1130 माघ शुक्ल चतुर्दशी खरनाल (नागौर)
- पिता – ताहड़ जी माता – रामकुंवरी
- लालन – पालन – बख्शोजी – सुगणा
- बहिन – राजल, बुंगरी माता (मन्दिर – नागौर)
- पत्नी – पेमलदे – पनेर (अजमेर) – रामचन्द्र जाट की पुत्री। सास – बादलदे
- विवाह स्थल – नागधार – पुष्कर – अजमेर
- गुरू – गोसाई नाथ जी।
- सवारी – लीलण / सिणगारी
- तेजाजी के खेत – खाबड़ा / धोरा
- पवित्र जलाशय – खेण गाँव नागौर में गैण तालाब
- गीत – तेजा टेर
- कर्मस्थली – बांसी दुगारी – बूँदी – तेजाजी का पवित्र स्थान है।
- उपनाम–

  काला – बाबा का देवता, गायों का देवता, साँपों का देवता

  ↓ ↓

  सर्प नारू रोग, कृषि उपकरण देवता, अजमेर के प्रमुख लोकदेवता।
- कृषि कार्य के दौरान जहरीले जानवरों से बचने के लिए 9 गाँठों की गोगा राखड़ी बाँधते हैं।
- राजस्थान के सर्वाधिक लोकप्रिय देवता – तेजाजी है।
- तेजाजी ने मण्डावरिया (अजमेर) में मेर के मीणाओं से लाच्छा गुजरी की गायों के लिए युद्ध लड़ा।
- लाच्छा गुजरी – पेमल की सहेली
- सेन्दरिया – मसूदा – अजमेर में तेजाजी को '''बासक' नामक साँप ने डंक मारा भाद्रपद शुक्ल 10 वि. सं. 1160 सुरसुरा (अजमेर) में तेजाजी वीरगति को प्राप्त होते है और इसी स्थान पर पेमल सती हुई थी।

- **मेला**
  - वीर तेजा पशु मेला – परबतसर (नागौर)
  - भाद्रपद शुक्ल दशमी (तेजा दशमी)
- धार्मिक मेला – खरनाल – नागौर (भाद्रपद शुक्ल दशमी)

  नोट : गहलोत सरकार द्वारा 2019 से राजकीय अवकाश की घोषणा की जाती है।
- वर्ष 2011 में तेजाजी पर ₹ 5 का डाक टिकट जारी हुआ।
- प्रतीक चिन्ह – अश्वरोही, हाथ में तलवार, जीभ पर सर्पदंश
- सहरिया जनजाति तेजाजी को इष्ट देव मानती है।

- तेजाजी के फड़ वाचन के समय – रावण हत्या वाद्य यंत्र।
- कृषकों का आराध्य देव है।
- तेजाजी के नाम पर ''सर्पदंश चिकित्सालय'' भावंता (अजमेर) (गोमूत्र निः शुल्क)
- यहाँ पर तेजाजी के भोपों द्वारा सर्प दंश का जहर चुसकर निकाला जाता है।
- जाति – जाट – गौत्र – धोलिया, वंश – नागवंश
- तेजाजी का विवाह बालि उम्र में 'बाल विवाह' हुआ था।
- तेजाजी की गाय का नाम रत्नी था।
- अजमेर जिले के लोकदेवता है।
- तेजाजी के भोपे –घोड़ला कहलाते हैं – कुम्हार जाति के होते हैं।

  नोट : गायों के मुक्तिदाता साँपों के देवता क्रमशः गोगाजी, तेजाजी, पाबूजी है।
- तेजाजी ने मृत्यु का समाचार लीलण द्वारा घर पर पहुँचाया।

तल्लीनाथ जी

- शेरगढ ठिकाने (जोधपुर) के ठाकुर
- पिता – वीरमदेव, भाई – मण्डोर शासक राव चुड़ा, गुरू – जालन्धरनाथ
- पूजास्थल – पंचमुखी पहाड़ी – पाँचोटा गाँव – जालौर
- प्रकृति प्रेमी लोकदेवता – वृक्षों के काटने पर रोक लगाने वाले प्रथम लोकदेवता ओरण – मन्दिर के आस पास का क्षेत्र + जालौर के लोग ओरण मानते हैं।
- जालौर के प्रसिद्ध लोक देवता है।
- मूल नाम – गांगदेव राठौड़।

भूरिया बाबा/गोतमेश्वर

- मीणा जनजाति का आराध्य देव है।
- मीणा जनजाति के लोग इनकी कभी झूठी कसम नहीं खाते हैं।
- मुख्य पूजा स्थलः अरणोद (प्रतापगढ), नाणारेलवे स्टेशन चांदिल अथवा चौटाला पर्वत सिरोही में है।
  1. अरणोद (प्रतापगढ़)– मेला – प्रतिवर्ष – बैशाख शुक्ल एकादशी से ज्येष्ठ कृष्ण – द्वितीया (मीणा जाति का लक्खी मेला) मुख्य मेला – बैशाख पूर्णिमा

     नोट : राजस्थान का लक्खी मेला – कैलादेवी मेला – त्रिकुट पर्वत – करौली जिले।

     ↓→ चेत्र शुक्ल अष्टमी
  2. नाणा रेलवे स्टेशन – पाली

     ↓→ 10 Km. दूरी चोटीला / चांदील पर्वत – सिरोही
     - यहाँ पर भूरिया बाबा का मन्दिर सुकड़ी नदी के किनारे है, इस नदी को गंगा नदी की पावणी। गंगा पातित कहा जाता है। इस नदी में मीणा जाति के लोग अपने पूर्वजों की अस्थियों का विसर्जन करते हैं।
     - यहाँ पर मेला – 13 अप्रैल से 15 अप्रैल
     - इस मन्दिर के पास पाप मुक्ति/गंगोद्ध कुण्ड भी है।
     - भूरिया बाबा शौर्य का प्रतीक है।
     - गोडवाड़ मीणाओं का आराध्य देव है।

हरीराम बाबा

- जन्म विक्रम संवत् 1959 झोरड़ा गाँव नागौर
- पिता – रामनारायण माता – चंदणीदेवी गुरू – भूरा
- जहरीले जानवर कर दंश का ईलाज मंत्रोपचार से करते हैं।
- हरीराम बाबा के मन्दिर में साँप की बम्बी की पूजा होती है व बाबा के प्रतिकरूप में 'चरण कमल' है।
- प्रतिवर्ष चैत्र शुक्ल चतुर्थ व भाद्रपद शुक्ल– पंचमी की बड़े मेले लगते हैं।

इल्लोजी

- सर्वाधिक मान्यता – जालौर – बाड़मेर
- राजस्थान में छेड़छाड़ के लोकदेवता।
- होलिका के प्रेमी/पति।
- इल्लोजी की बारात जालौर – बालोतरा बाड़मेर की प्रसिद्ध है।
- इल्लोजी की प्रतिमा – आदमकद् नग्न अवस्था में होती है।
- बांझ स्त्रियों द्वारा इलो–इल्ला नृत्य करने पर पुत्र प्राप्ति होती है।
- मारवाड़ में होली के अवसर पर पूजा होती है।
- धूलण्डी इल्लोजी के स्मृति में मनाई जाती है।

पीर बावसी

- प्रताप सिंह मण्डेला के पुत्र
- गोडावाड़ क्षेत्र में मान्यता।
- **प्रमुख मंदिर** – काला टोकरा गाँव अरावली पर्वतमाला में जालौर – सिरोही तट सीमा पर यहाँ चैत्र शुक्ल पंचमी को मेला भरता है।
- गौरक्षा हेतु प्राण त्यागे थे।
- इसके मन्दिर में गुलाबी बान नृत्य होता है जिसमें गणगौर व बावसी की गाथाएँ गाई जाती है।
- आदिवासियों के प्रसिद्ध लोकदेवता।

आलम जी : बाडगेर

- मूलनाम – जेतमलोठ राठौड़
- पूजा स्थलः राड़घरा – ढोंगी नामक रेत का टीला – आलम जी का धोरा
- मेला – भाद्रपद शुक्ल द्वितीया को भरता है।
  नोट : आलम जी का धोरा – घोड़ी प्रजनन के रूप में विख्यात है।

आलमजी का धोरा – गुढामलानी बाडमेर – घोड़ों के तीर्थस्थल के रूप में माना जाता है।

लोकदेवता	सवारी	अवतार	नृत्य	मेले
रामदेवजी	नीला घोड़ा – रेवन्त	कृष्ण	तेरहताली	भाद्रपद शुक्ल – दशमी
पाबूजी	घोड़ी केसर कालबी	लक्ष्मण	थाली	चैत्र अमावस्या
गोगाजी	घोड़ी – गोगा बप्पा / नीली घोड़ी	–	गेगा	भाद्रपद कृष्ण – नवमी
हड़बूजी	सियार	–	–	भाद्रपद शुक्ल – दशमी
मेहाजी	घोड़ा – किरड़ – काबरा	–	–	भाद्रपद कृष्ण – अष्टमी
तेजाजी	घोड़ी – लीलण	–	गोगा	भाद्रपद शुक्ल – दशमी
देवनारायण	घोड़ा – लीलागर	विष्णु	–	भाद्रपद शुक्ल – सप्तमी
बावासी	–	–	गुलाबी – बान	चैत्र शुक्ल – पंचमी